प्रश्न① अरस्तु का अनुकरण सिद्धान्त :- प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक प्लेटो के शिष्य अरस्तु का पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में महान योगदान है, अरस्तु (384ई० - 322ई०) सिकंदर महान के गुरु के रूप में विख्यात अरस्तु से पूर्व प्लेटो ने अनुकरण सिद्धान्त का विवेचन किया और यह स्थापित किया कि काव्य त्याज्य है, क्योंकि ईश्वर ही सत्य है, इसकी अनुकृति संसार और संसार की अनुकृति काव्य है, इस प्रकार काव्य अनुकरण का अनुकरण है।

अरस्तु ने काव्य को सौन्दर्यवादी दृष्टि से देखा और इसे दार्शनिक, राजनीतिक एवं नीतिशास्त्र के बंधन से मुक्त किया, उनके शब्दों में Art is the imitation of Nature. अर्थात् कला प्रकृति की अनुकृति है, अरस्तु ने हुबहु नकल को अनुकरण नहीं माना है उनके अनुसार प्रकृति के अनेक दोष और अभाव भी अनुकृति की प्रक्रिया से कला द्वारा पुरे किए जाते हैं। उनके शब्दों — "Jurnal art Partly but Nature cannot." जो वस्तुतः कवि या कलाकार अपनी संवेदना और अनुभूति से अपूर्णता को पूर्णता प्रदान करता है और उसे आदर्श रूप देता है, अरस्तु के अनुसार कवि वस्तुओं को यथास्थित रूप में वर्जित नहीं करता अपितु उनके युक्ति-युक्त संभाव्य रूप से वर्जित करता है यानी वस्तु कैसी है कि अपेक्षा, वस्तु कैसी होनी चाहिए पर कवि अधिक बल देता है, इस प्रकार की अभिव्यक्ति के लिए कवि वस्तु के सत्य का बलिदान भी कर सकता है। और उसमें

परिवर्तन भी कर सकता है। वह मानव के कार्य ही नहीं अपितु उसके भाव-विचार चरित्र आदि में भी कल्पना के अनुरूप परिवर्तन कर देता है। काव्य में जिस मानव का चित्रण होता है, वह सामान्य से अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी वस्तुतः कवि सहृदय के आनंद के लिए यह परिवर्तन करता है। और ऐसा करने से उसे भी यह आनंद प्राप्त होता है

अरस्तु के सिद्धान्त के मुख्य बिन्दु :-

(i) कविता जगत की अनुकृति है, तथा अनुकरण मनुष्य की मूल प्रवृत्ति।

(ii) अनुकरण से हमें शिक्षा मिलती है बालक भी अपनों से बड़ों की क्रियाएँ देखकर उसका अनुकरण करता है।

(iii) अनुकरण के माध्यम से भयमूलक अथवा त्रासमूलक वस्तु को इस प्रकार किया जा सकता है, जिससे आनंद की प्राप्ति होती है अनुकरण की प्रक्रिया आनंददायक है, हम अनुकृत वस्तु में मूल का सादृश्य देखकर आनंद प्राप्त करते हैं।

(iv) अरस्तु ने काव्य की समीक्षा स्वतंत्र रूप से की है। प्लेटो की भाँति दर्शन राजनीति आदि के पक्ष से नहीं देखा।

समग्रतः अरस्तु ने अनुकरण सिद्धान्त को (प्लेटो की भाँति) उपेक्षा नवीन अर्थ प्रदान किया। इसमें शिवम् सत्यम् की अपेक्षा सुन्दरम् पर बल दिया। तथा उसे दार्शनिकों और राजनीतिज्ञों के चंगुल से मुक्त किया।

Scanned with Cam